मिस्टर रमफिट

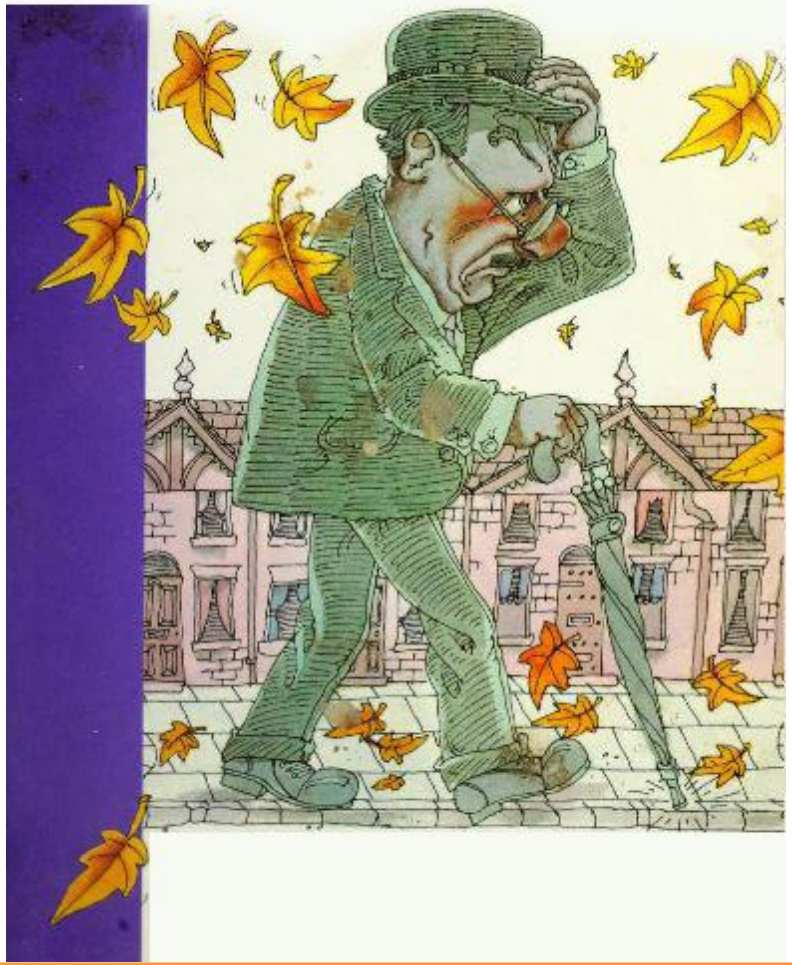

मिस्टर रमफिट

एक समय की बात है. एक अद्भुत व्यक्ति थे, मिस्टर रमफिट जो एक लेखाकार थे. अपने दफ्तर में जो भी आंकड़े वह देखते, उन आंकड़ों का कुछ न कुछ जोड़ होता था, अर्थ होता था. और इस कारण मिस्टर रमफिट सोचते थे कि संसार में हर बात का कोई न कोई जोड़ या अर्थ होना ही चाहिये. पर ऐसा था नहीं.

"मुझे लगता है कि इस संसार को गलत तरीके से चलाया जाता है," मिस्टर रमफिट बड़बड़ाये.

जब बसों में बैठ कर वह घर से दफ्तर और दफ्तर से घर जाते तो इस विषय पर गंभीरता से सोचते रहते थे. बहुत सोचने का बाद उन्हें लगा कि दुनिया की सारी गड़बड़ ऋतुयों के कारण ही थी.

"इस व्यवस्था में बहुत गड़बड़ है," मिस्टर रमफिट बोले. "दुनिया को तय करना होगा कि उसे क्या चाहिये और फिर उसी तरीके से सब कुछ चलना चाहिये. जैसे ही ग्रीष्म ऋतु में गर्मी बढ़ती है, मौसम का चक्र घूम जाता है और ठंड होने लगती और फिर सर्दी आ जाती है. ठंड होती है, पर क्या लोग संतुष्ट हो जाते हैं? नहीं! फिर गर्मी बढ़ने लगती है-वसंत ऋतु, फिर ग्रीष्म ऋतु, और वही अभागा चक्र शुरू हो जाता है, बार-बार घूमने वाले एक हिंडोले की तरह. सब गड़बड़ घोटाला है!"

जब-जब ऐसे विचार मिस्टर रमफिट के मन में आते, वह अपने छाते से बार-बार बस के फर्श को थपथपाते.

फिर एक दिन मिस्टर रमफिट इस सब से खूब परेशान हो गये. उन्होंने बैंक से अपना सारा पैसा निकाल लिया और एक घाटी खरीद ली जिसके बीच में एक घर भी था. वह प्रतीक्षा करते रहे, जब तक कि मौसम सर्दी और वसंत के बीच में न आ गया. पेड़ों के पत्ते गिर गये थे; घास छोटी और साफ़ थी. मौसम न बहुत गर्म था और न ही बहुत ठंडा.

"सुंदर, अति-सुंदर," मिस्टर रमफिट बुदबुदाये और प्रसन्नता से अपने हाथ मलने लगे. वह अपनी घाटी में आये और घाटी के चारों ओर एक दीवार बना दी. दीवार में एक बड़ा फाटक भी था, जिस पर उन्होने एक नोटिस लगा दिया, "ऋतुओं को अंदर आने की अनुमति नहीं."

"यह व्यवस्था ठीक रहेगी," मिस्टर रमफिट बड़बड़ाये.

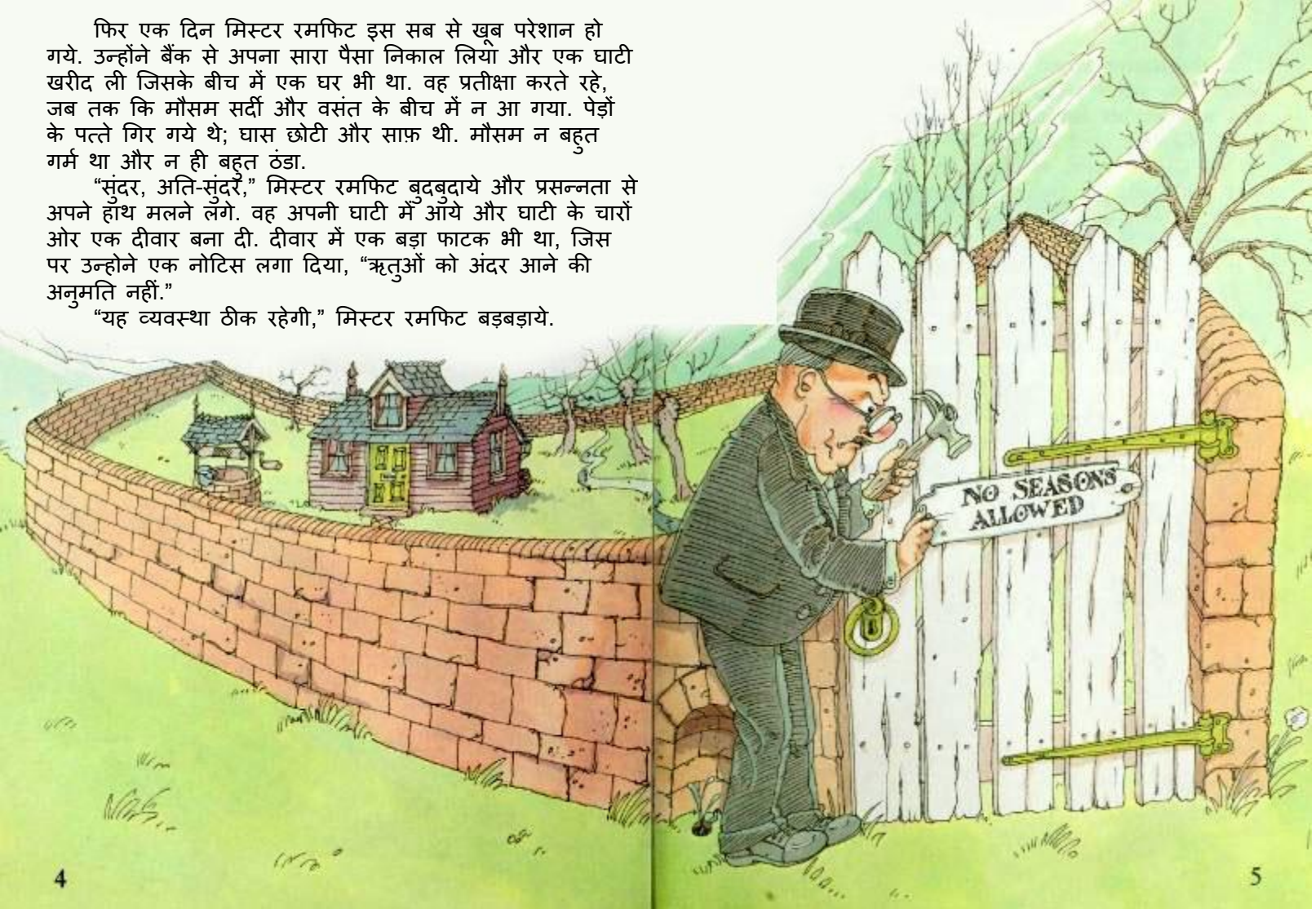

बस मिस्टर रमफिट और उनकी घाटी से ऋतुयें दूर रहने लगीं. उनकी साफ़-सुथरी घाटी में पेड़ों पर पत्ते न थे, घास छोटी थी और वहां न गर्मी थी न सर्दी.

मिस्टर रमफिट वहां सीधा-सादा जीवन जी रहे थे. जब कभी किसी काम के लिए उन्हें घाटी से बाहर जाना पड़ता था तो आते-जाते हुए सारे रास्ते अख़बार के पन्नों पर दृष्टि गड़ाये, समाचार पढ़ते रहते थे और बाहर के अस्त-व्यस्त मौसम की ओर ध्यान भी न देते थे.

और उनकी मुस्कान छोटी और फीकी होती गयी.

फिर एक दिन पानी लेने के लिए मिस्टर रमफिट कुँए के पास आये. लेकिन कुएं में पानी नहीं था. यह पहली आश्चर्यजनक बात थी.

"यह तो गंभीर समस्या है," मिस्टर रमफिट बोले. "सूखे कुएं का मुझे क्या लाभ."

दूसरी आश्चर्यजनक बात यह थी कि कुएं ने भारी आवाज़ में उन्हें उत्तर दिया, "दिक्कत यह है कि बाहर चश्मे में कोई पाँव डाले बैठा है."

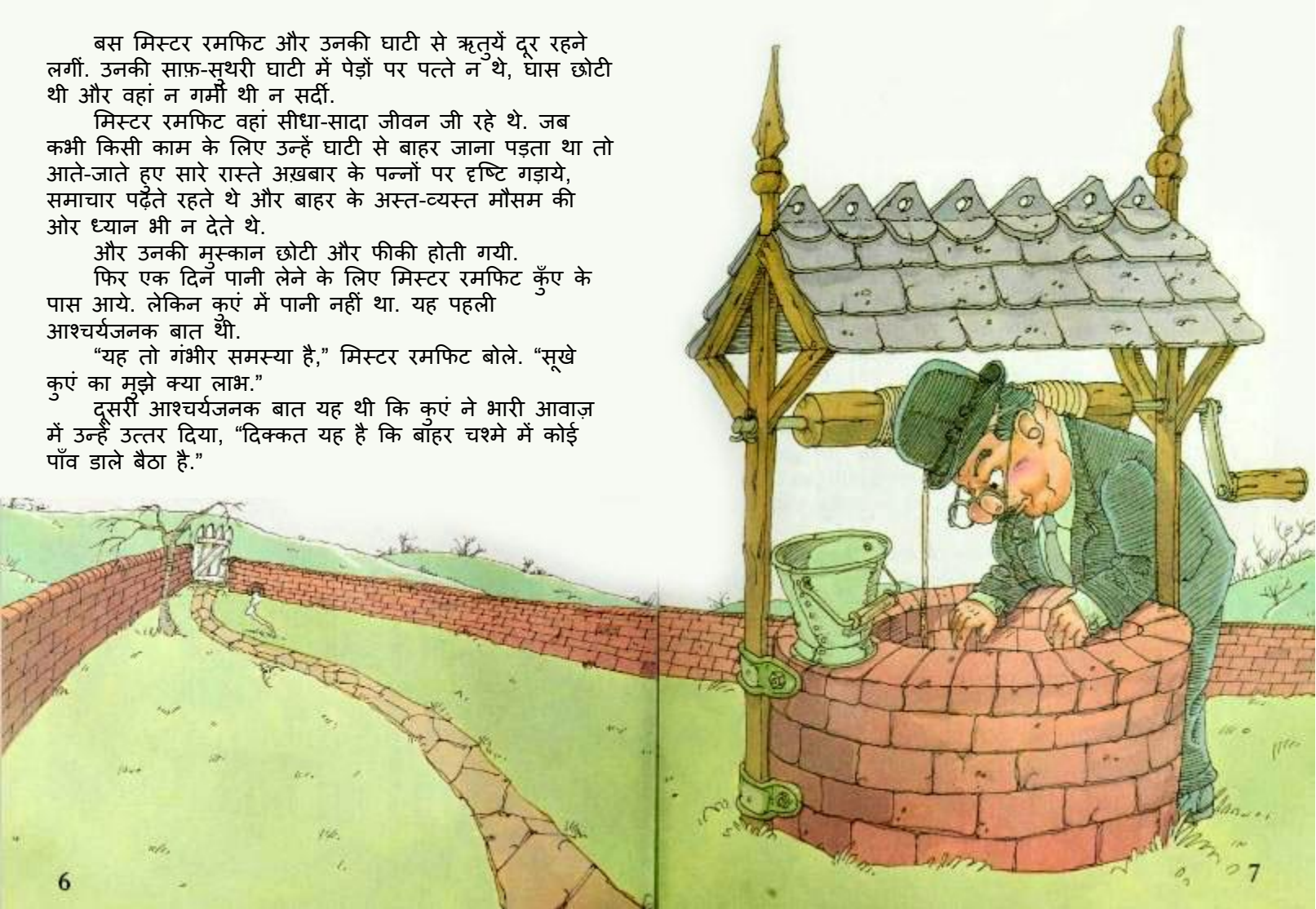

मिस्टर रमफिट तुरंत चल दिए. उन्होंने फाटक के बीच से देखा. बाहर एक लड़का और एक लड़की, हरे वस्त्र पहने खड़े थे. उनके बाल खूब लंबे थे और बालों में लगे सफ़ेद फूल तारों समान लग रहे थे. उनके आसपास छोटे शरारती मेमनों का झुंड यहाँ-वहाँ फुदक रहा था.

लड़की का एक पाँव उस चश्मे में था जो फाटक के पास बुदबुदा रहा था. उसने अपनी भूरी, तिरछी, मुस्काती आँखों से मिस्टर रमफिट को देखा.

"आप कौन हैं?" मिस्टर रमफिट ने संदेह से देखते हुए पूछा.

"इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कौन हैं," लड़के ने उत्तर दिया. "लेकिन लोग हमें वसंतऋतु कहते हैं. क्या हम भीतर आ जाएँ?"

उसने हाथ में एक बांसुरी पकड़ रखी थी.

"बिलकुल नहीं. आपकी यहाँ कोई आवश्यकता नहीं है," मिस्टर रमफिट ने चिढ़ते हुए कहा.

"आप के आलूबुखारे के पेड़ को है!" लड़की ने पेड़ की ओर संकेत करते हुए कहा.

मिस्टर रमफिट ने उस पेड़ को देखा. उस पर एक भी पत्ता न लगा था.

"यह आलूबुखारे का पेड़ है?" मिस्टर रमफिट ने उत्सुकता से पूछा और जैसे ही वह उस पेड़ को घूरने लगे उसकी एक डाल पर, जो दीवार के ऊपर झुकी हुई थी, नये बौर निकल आये.

"मैं कठोर नहीं हूँ," मिस्टर रमफिट ने सोचते हुए कहा. "मैं आलूबुखारे के पेड़ों के साथ निर्मम व्यवहार नहीं करना चाहता. एक ऋतु के आने में कोई हानि नहीं है." उन्होंने फाटक थोड़ा सा खोल दिया. "आप अंदर आ सकते हैं," उन्होंने कहा.

बस बसंतऋतु भीतर आ गयी.

"मैं बांसुरी बजाऊँगा और मेरी बहन नाचेगी," लड़के ने कहा.

वह आलूबुखारे के पेड़ से टेक लगा कर खड़ा हो गया और बांसुरी बजाने लगा. बांसुरी की आवाज़ धीमी और सुरीली थी, लेकिन मिस्टर रमफिट को लगा कि वह आवाज़ सारी घाटी में गूँज रही थी.

लड़की नाचने लगी और जहाँ-जहाँ उसके पाँव पड़ते वहाँ नई, हरी घास उग आती. उसने पेड़ों को छुआ-ओह, कहीं गुलाबी कोंपलें निकल आयीं! ओह, कहीं सफेद कोंपलें! छोटी नदी में लगे विलो के पेड़ों, ऊंचे पतले पॉप्लर के पेड़ों -सब हरे-भरे हो गये.

पेड़ों की जड़ों के आसपास जामुनी और सफेद क्रोकस के फूल, सफेद और बैंगनी वायलेट के फूल, कोमल प्रिमरोस और धीरे-धीरे हिलते लंबे नरगिस के फूल उग आये.

पहाड़ी को ढलान पर नाचती वसंत लड़की पहले एक फूल जैसी दिखाई दी, फिर एक पेड़ जैसी और अंत में हरी रंग की ज्योति जैसी. उसके पीछे छोटे मेमने ख़ुशी से उछल-कूद कर रहे थे. उसके सामने डैफोडिल के फूल प्रकट हो गये. और मेमनों के सफ़ेद झुंड के सामने और डैफोडिल के सुनहरी फूलों के पीछे उसने नृत्य किया.

जैसे एक पत्ता हवा में यहाँ-वहाँ उड़ता है, वैसे ही वह लड़का उस लड़की के पीछे-पीछे भागता रहा. मिस्टर रमफिट अचरज से उन्हें देखते रहे, दोनों ने हाथ हिला कर उनका अभिवादन किया. दोनों उन पर हँसते रहे. फिर पहाड़ी पर गाते-नाचते वह दोनों गायब हो गये, लेकिन वसंत के आगमन से घाटी खिल उठी थी.

"ठीक है," मिस्टर रमफिट बुदबुदाये. "अब वसंत ऋतु अंदर आ ही गयी है तो क्यों न थोड़ी सी गोभी लगा दूँ."

"किसने ऐसा सोचा था," जब मिस्टर रमफिट पौधों के डिब्बे लिए जा रहे थे, तब पौधे बेचने वाली औरत ने कहा. "मुझे तो लगा था कि वह एक सूखी लकड़ी समान था, लेकिन वसंत के आने पर सूखी लकड़ियाँ भी हरी हो जाती हैं."

मिस्टर रमफिट ने फाटक पर लगा नोटिस बदल दिया, नये नोटिस पर लिखा था, "सिर्फ वसंत ऋतु भीतर आ सकती है."

फिर एक दिन मिस्टर रमफिट कुएं पर गये और देखा कि कुआं बिलकुल सूखा हुआ था.

"ऐसी उम्मीद न थी," वह चिल्लाये.

"किसी ने अपना पाँव चश्मे में डाल रखा है!" कुएं ने भारी आवाज़ में समझाया.

बस मिस्टर रमफिट देखने चल पड़े.

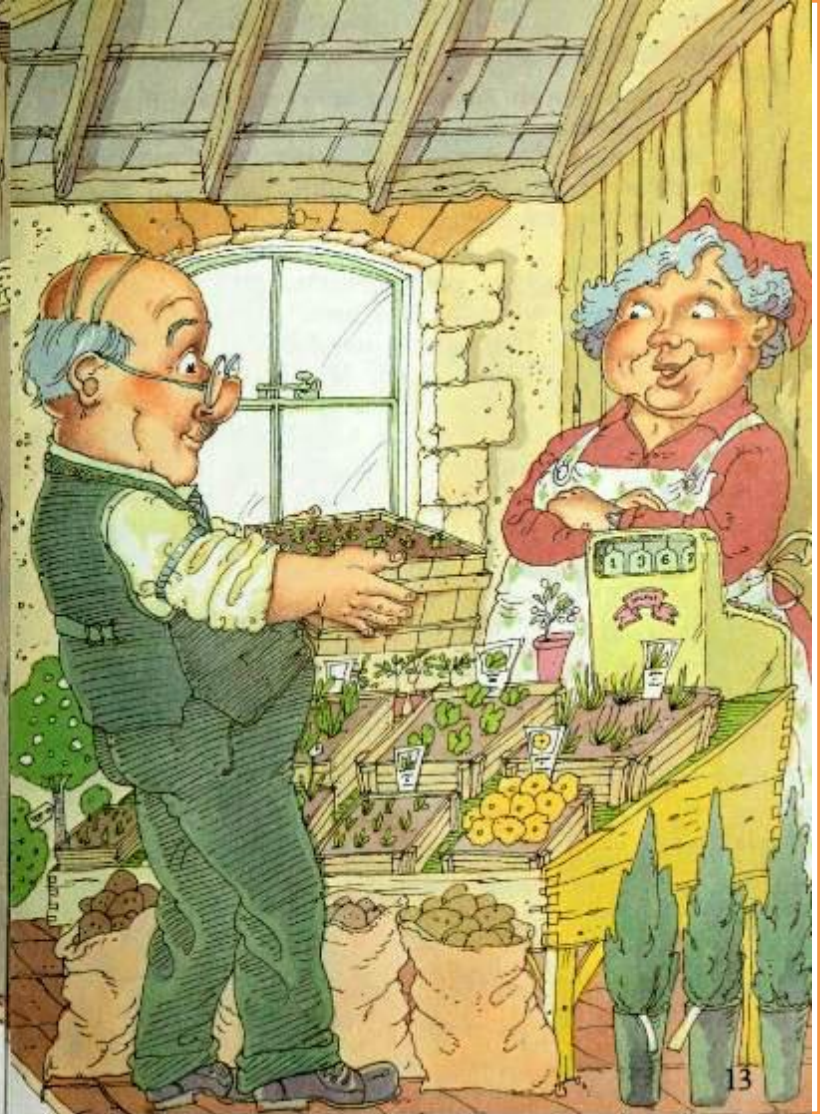

बाहर एक पुरुष और एक स्त्री थे, जिनके बाल सोने के, त्वचा भूरी, आँखें सुनहरी और चमकीली थीं. उन्होंने सोने के बने वस्त्र पहन रखे थे.

"आप कौन हैं?" मिस्टर रमफिट ने पूछा.

"इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कौन हैं," पुरुष ने कहा, "लेकिन लोग हमें ग्रीष्म ऋतु बुलाते हैं और हम यहाँ आये हैं. क्या हम अंदर आ जाएँ?"

"किसी ने आपको निमंत्रण नहीं दिया!" मिस्टर रमफिट ने गुस्से से कहा.

"हाँ, सच में-तुम्हारी गोभियों ने दिया है," स्त्री बोली और वह हंस दी. उसकी हंसी ऐसी थी जैसे कोई बड़ी घंटी धीमे से बज रही हो. मिस्टर रमफिट ने देखा कि हंसी की आवाज़ सुनाई देते ही सारी गोभियाँ बड़ी और गोल-मटोल और हरी हो गईं.

"मैं चाहता हूँ कि मेरी गोभियाँ प्रसन्न रहें," मिस्टर रमफिट ने कहा. वह थोड़ा नाराज़ लग रहे थे, लेकिन थोड़ा खुश भी थे. "मुझे लगता है कि तुम्हें अंदर आने देना पड़ेगा. मुझे खेद है कि मेरी घाटी अधिक साफ-सुथरी नहीं है, लेकिन अभी-अभी वसंत ऋतु यहाँ से होकर गयी है."

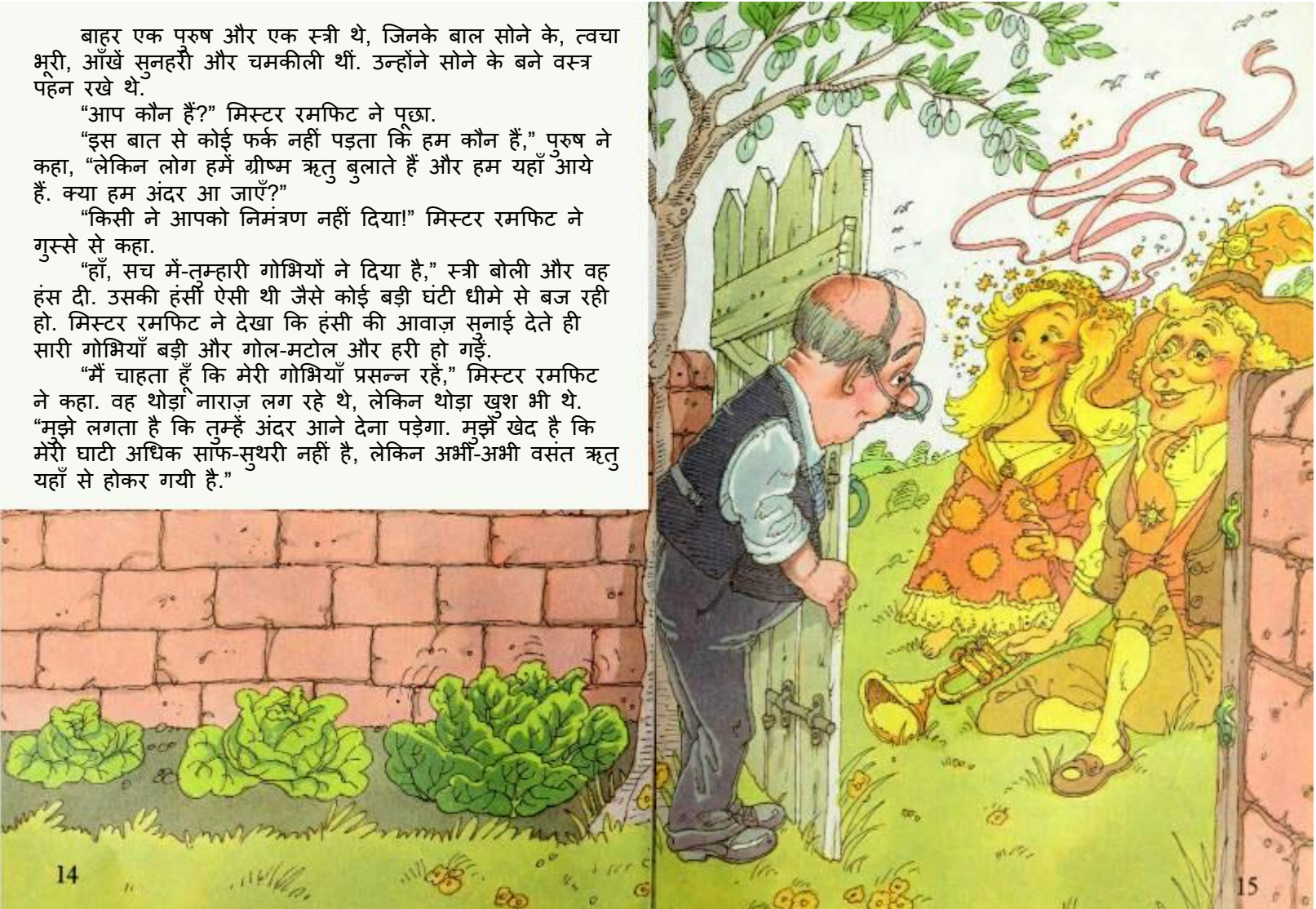

फिर ग्रीष्म ऋतु अंदर आ गई. उस पुरुष ने एक तुरही बजाई और पहाड़ियों से उसकी आवाज़ गूँजती हुई हर ओर सुनाई दी. सभी गुलाब खिल उठे.

सुनहरी स्त्री नाचने लगी, और सफेद, गुलाबी और बैंगनी रंग के फोक्स्गोल्व के फूल और सुनहरी रंग के लिली के फूल खिल उठे. फूलों के खिलने के साथ आई मीठी सुगंध, प्रकाश, लंबे दिन और तेज़, खूब तेज़ धूप और-ओह, मिस्टर रमफिट की नाक भी पक गई.

"मुझे एक तंबू खरीदना चाहिए," ग्रीष्म के नर्तकों को हाथ हिला कर अलविदा करते हुए, मिस्टर रमफिट ने सोचा.

उन्होंने एक तंबू खरीद लिया और नदी किनारे अपना तंबू लगा दिया. हर सुबह वह नदी के साफ और गहरे पानी में एक मछली समान डुबकियां लगाते और पानी को छपछपाते. जब वह काम पर जाते तो अपनी अख़बार के ऊपर उन्हें ग्रीष्म ऋतु अपने सुनहरे रंगों में झूमती हुई दिखाई पड़ती.

"ऐसे मौसम का क्या लाभ," मिस्टर रमफिट बोले, "जो किसी के काम में बाधा बन जाए!" लेकिन यह कहते हुए वह थोड़ा मुस्करा भी रहे थे.

एक दिन वह कुएं के पास आये और एक बार फिर कुआं सूख गया था.

"अब इस बार क्या हुआ?" वह बोले.

"कोई औरत अपना पाँव चश्मे में डाले बैठी हुई है," कुएं ने अपनी भारी, रूखी आवाज़ में कहा.

बस, धूप में झुलसे हुए और अस्त-व्यस्त से मिस्टर रमफिट फाटक की ओर झटपट चल दिए. बाहर दो जिप्सी थे, एक आदमी और एक औरत. दोनों के बाल लाल रंग के थे और आँखें पीली. और निश्चय ही औरत ने अपना भूरा, खरोंचों से भरा एक पाँव पानी में डाल रखा था.

"इस नोटिस का क्या अर्थ है?" उस जिप्सी ने मिस्टर रमफिट को फाटक के बीच से देखते पाया तो चिल्ला कर पूछा. "इस पर लिखा है कि 'सिर्फ वसंत और ग्रीष्म ही अंदर आ सकते हैं'. हमें शरद ऋतु कहते हैं और हम अंदर आना चाहते हैं."

"आपको किस ने बुलाया?" मिस्टर रमफिट ने पूछा.

"क्यों, निश्चय ही सेब के पेड़ ने. आपके सेब के पेड़ ने," औरत ने हँसते हुए कहा. वह सेब के पेड़ को देख कर मुस्कराई.

मिस्टर रमफिट ने देखा कि पत्तों के नीचे सेब बड़े हो कर पक गये थे.

"चलो, ठीक है," मिस्टर रमफिट ने फाटक खोलते हुए कहा. "मैंने अपने आलूबुखारे के पेड़ के लिए वसंत को भीतर आने दिया. अब अपने सेब के पेड़ की इच्छा पूरी करने से मैं कैसे मना कर सकता हूँ."

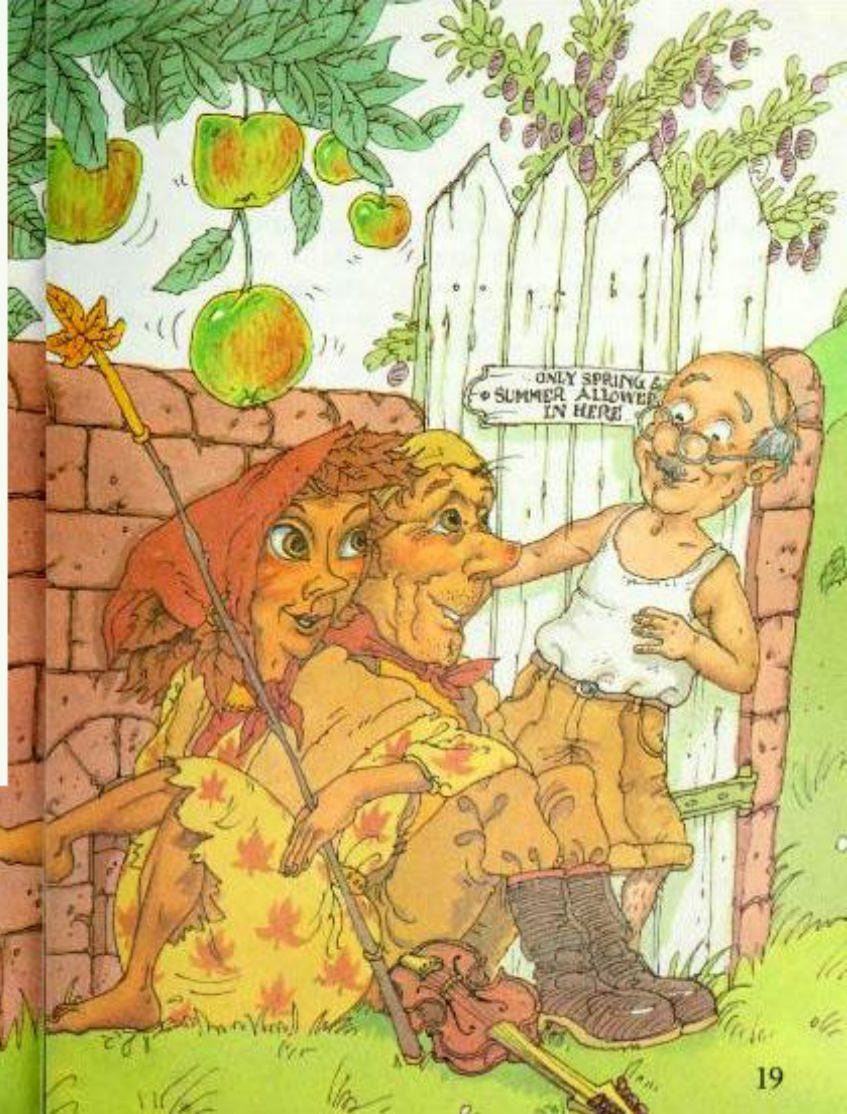

तो इस तरह रूखी लेकिन सुहावनी शरद भीतर आ गयी. उसके आते ही सिरहन पैदा करती ठंडी हवा भी चलने लगी.

मिस्टर रमफिट ने अपना तंबू सेब के पेड़ के नीचे लगा दिया और शरद ऋतु को घाटी में नाचते हुए वह देखने लगे. लाल और पीले सेब चबाते हुए वह जिप्सी महिला के हाथों के संकेत पर पेड़ों से पत्तों को गिरते हुए देखने लगे. उस औरत के गाने से नाशपाती के पेड़ पर और अन्य बेलों पर फल निकलने शुरू हो गये.

शरद पुरुष के वायलिन का सुंदर संगीत सुन कर क्रोकस के रंगबिरंगे फूल और मेरीगोल्ड के सूर्य समान प्रसन्न फूल खिल उठे.

"चलो, आखिरकार," मिस्टर रमफिट ने अपने से कहा, "सब का ध्यान रखना ही उचित होता है. पेड़ों को फूल भी चाहियें और फल भी."

उन्होंने फाटक पर लगा नोटिस फिर बदल दिया. अब नोटिस पर लिखा था, "शीतऋतु, बाहर रहो."

फिर एक सुबह वह अपने तंबू में नींद से जागे, बाहर सर्दी थी. आँखें झपकाते हुए उन्होंने इधर-उधर देखा. उन्होंने देखा-उनके बगीचे के बीच में-दो स्लेटी रंग के लोग खड़े थे. उन्होंने स्लेटी रंग के चोले पहन रखे थे, उनके बाल और आँखें भी स्लेटी थीं. उनके चेहरे कठोर थे पर वह विनम्रता से हाथ जोड़ रखे थे.

"आप कौन हैं?" मिस्टर रमफिट चिल्लाये. "आप को किस ने यहाँ बुलाया?"

"इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कौन हैं," पुरुष ने कहा, "क्योंकि न तो तुम और न कोई और हमारा असली चेहरे देख पायेगा. लेकिन अब हम यहाँ आ ही गये हैं और तुम हमारे मित्र हो, तुम हमें शीतऋतु बुला सकते हो."

"तुम्हारे बगीचे ने और तुम्हारी घाटी ने हमें बुलाया है," महिला ने कहा, "क्योंकि वह सब सोना चाहते हैं."

पौधों पर खिले फूल सिमट गये, पेड़ खामोश हो गये और उस समय के सपने लेने लगे जब वसंत ऋतु ख़ुशी से नाच कर और गा कर उन्हें नींद से जगायेगी.

अचानक मिस्टर रमफिट का मन बिलकुल शांत हो गया.

"आखिर," उन्होंने अपने से कहा, "पूरा वर्ष मेरी घाटी बहुत व्यस्त रही है. अब उसे सोना चाहिए."

शीत पुरुष और महिला कोई आवाज़ किये बिना, धूएँ समान, वहां से चले गये और मिस्टर रमफिट उन्हें जाते हुए देखते रहे. जैसी वह जा रहे थे, वह बोले, "लगता है अब घाटी में पहले जितनी ही ऋतुएँ हैं और घाटी फिर से अव्यवस्थित हो गयी है. पर देखा जाए तो मैं भी थी थोड़ा अव्यवस्थित हो गया हूँ. पर इस बात का मुझे कोई खेद नहीं है क्योंकि मुझे समझ आ गया है कि सब ऋतुओं का जोड़ कुछ होता है, हालंकि मुझे यह नहीं पता कि वह जोड़ क्या है, लेकिन जितना मैं गिन सकता हूँ उससे तो अधिक है."

शीत ऋतु के लोग पहाड़ियों में और फिर बादलों में लुप्त हो गये. मिस्टर रमफिट ने अपना तंबू समेट लिया.

“शीघ्र ही वसंत ऋतु आ जायेगी!” उन्होंने आलूबुखारे के पेड़ को कहा. लेकिन पेड़ सो रहा था और उसने उनकी बात न सुनी.

“फिर ग्रीष्म!” उन्होंने सेब के पेड़ को कहा लेकिन उसने भी कोई उत्तर न दिया.

“और शरद ऋतु!” वह धीमे से बोले. अचानक एक विचार आने पर उन्होंने अपनी त्योरी चढ़ाई, फिर मुस्कराए और फिर दुबारा त्योरी चढ़ाई.

“बहुत गड़बड़ है,” मिस्टर रमफिट बोले. लेकिन उनकी मुस्कान बड़ी थी और खिली हुई थी.

समाप्त